

बीज और बीज



मिल्लीसेंट, चित्र : टोमी,

हिंदी : विदूषक

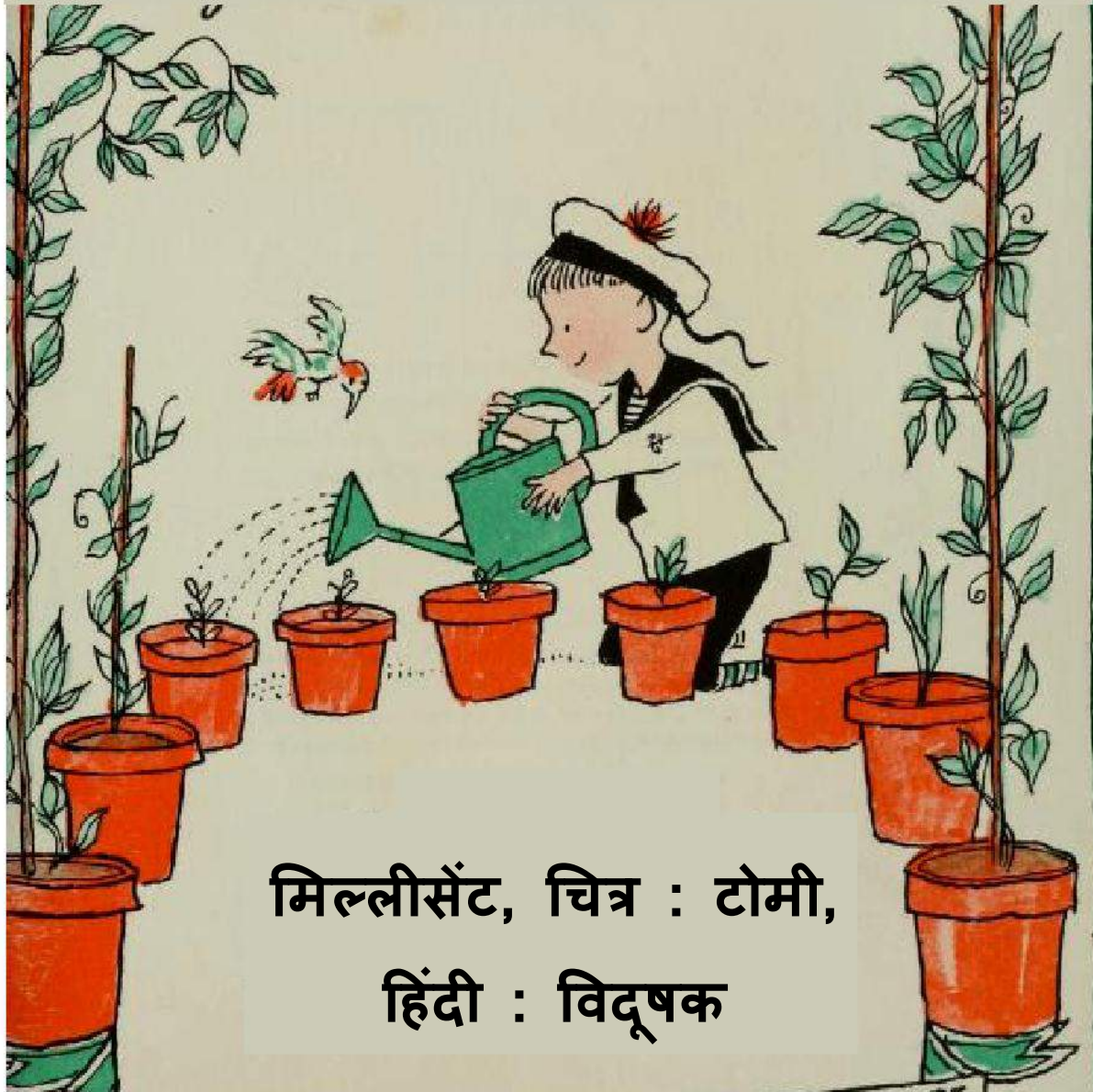
AN I CAN READ SCIENCE BOOK

यह विज्ञान की एक ऐसी किताब है जिसे बच्चे खुद अपने आप पढ़ पाएंगे.

बेनी कुछ जानना चाहता है. क्या एक पत्थर उगेगा? क्या एक कंचा उगेगा? क्या एक बीज उगेगा? उसने उन तीनों को अलग-अलग गमलों में बोया. परन्तु छोटा हरा पौधा, सिर्फ उसी गमले में से बाहर निकला जिसमें उसने बीज बोया था. बस यह तो शुरुआत थी. उसके बाद बेनी, किचन में से कई अन्य बीज लाया और उसने उन्हें भी बोया. इनमें नींबू के बीज भी शामिल थे. और वे सभी बीज उगे.

जैसे-जैसे बेनी, बीजों के बारे में सीखेगा वैसे-वैसे तमाम युवा पाठक भी, बीजों के बारे में रोचक जानकारीयों हासिल करेंगे. और जब बेनी की लोबिए की बेल बड़ी होकर उसमें बीज लगेंगे तो बेनी की खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा. टोमी के नायाब चित्र पुस्तक में चार चाँद लगाते हैं. इस सुन्दर किताब को बच्चे बार-बार पढ़ना चाहेंगे.

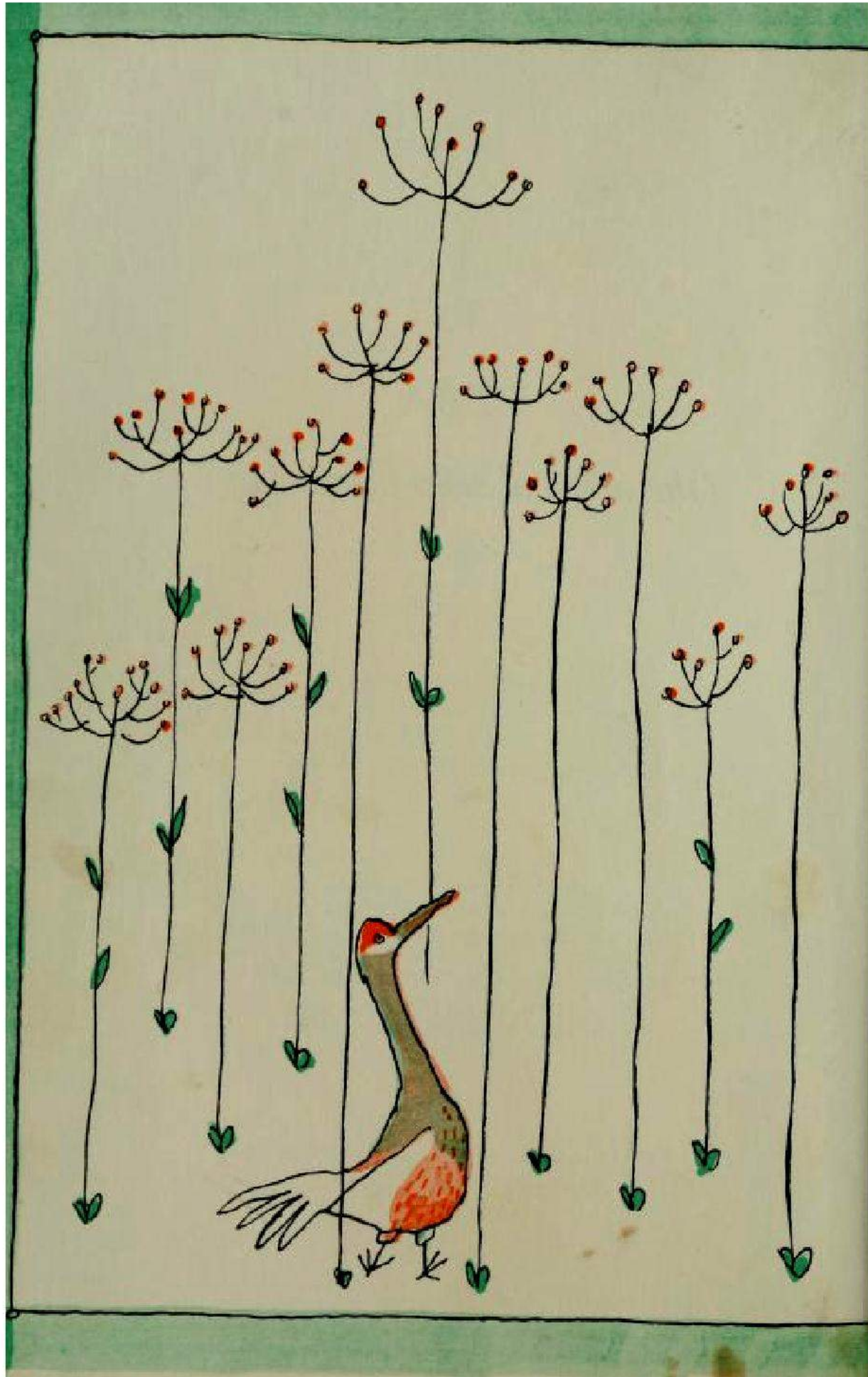
बीज और बीज



मिल्लीसेंट, चित्र : टोमी,

हिंदी : विदूषक

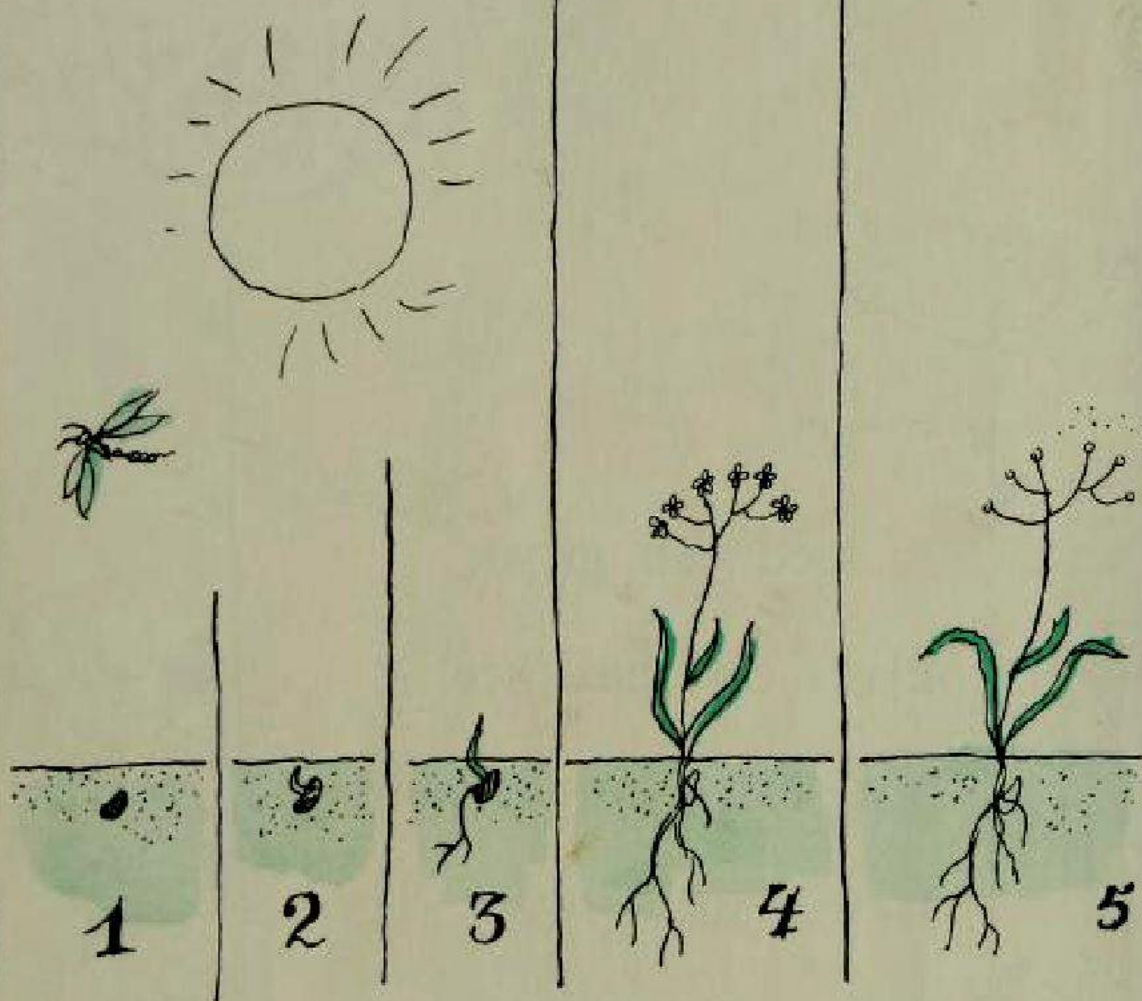
AN I CAN READ SCIENCE BOOK





एक

बीज उग सकता है.
तुम बीज को बोकर देखो.
तुम कंकड़ भी बोकर देखो.
वो नहीं उगेगा.
तुम कंचा बोकर देखो.
वो भी नहीं उगेगा.
पर बीज उगेगा.



बीज नायाब होता है.

वो उगता है.

फिर ज़मीन में से कुछ बाहर आता है.

एक हरा तना बाहर निकलता है.

छोटी पत्तियां बड़ी होती हैं.

बीज से एक नया पौधा पैदा होता है.



यह बेनी है.

बेनी यह जानना चाहता है.

क्या पत्थर उगेगा?

क्या कंचा उगेगा?



“उनको बoker देखो,” उसके पिताजी ने कहा.

“उन्हें इन छोटे गमलों में बोओ.

अगर पत्थर उगेगा,

अगर कंकड़ उगेगा,

तो तुम्हें पता चल जाएगा.”



बेनी ने एक गमले में पत्थर बोया.
उसने दूसरे गमले में कंकड़ बोया.
“मैं रोज़ उनमें पानी डालूँगा.
फिर देखूँगा कि क्या पत्थर और कंकड़
उगते हैं,” बेनी ने कहा,
“वे इन गमलों में उगेंगे.”



फिर बेनी को कुछ और पड़ा मिला.

“क्या कंचा भी उगेगा?” उसने कहा.

उसने कंचे को भी एक अन्य गमले में बोया.

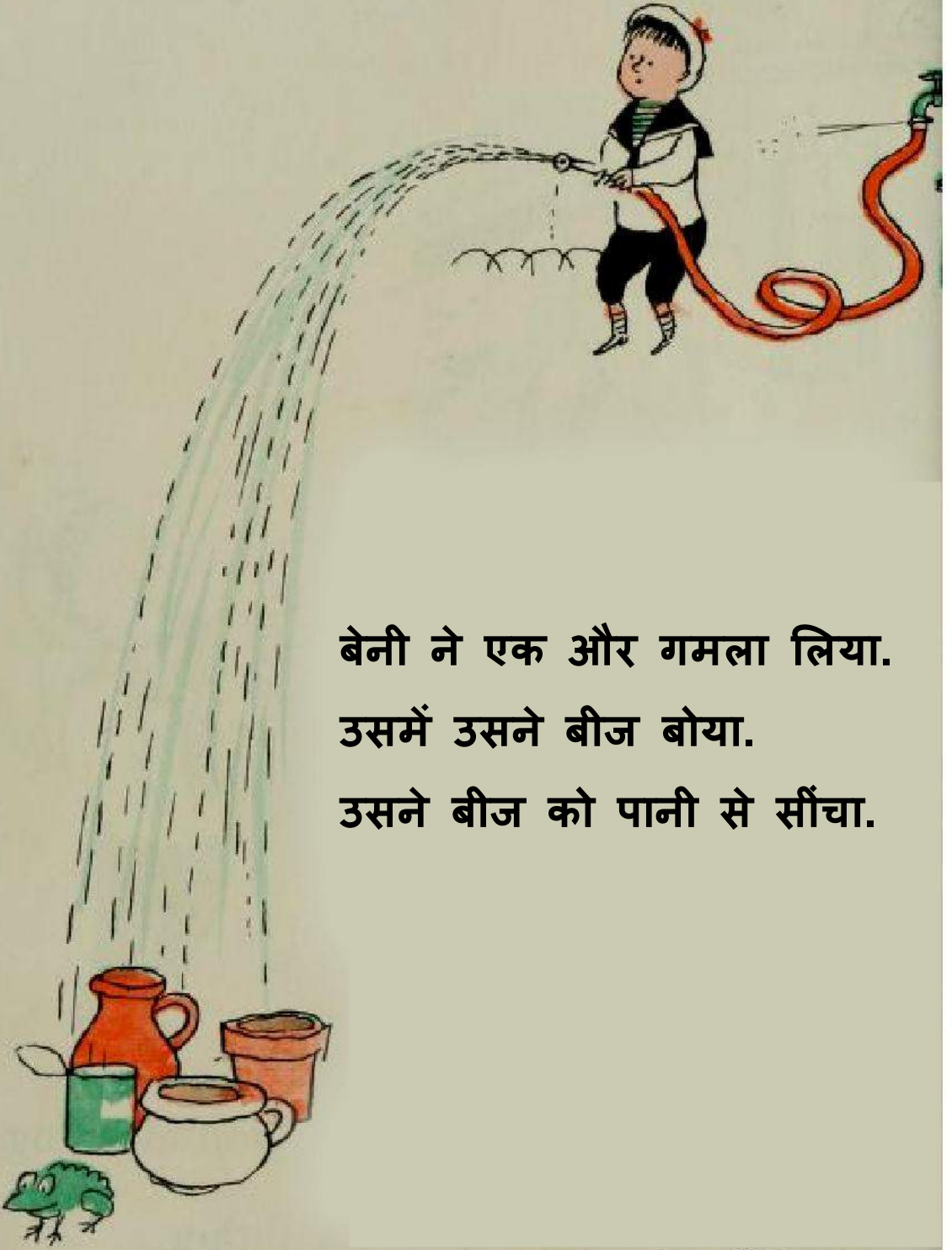
“अगर मैं उसमें रोज़ पानी दूंगा तो मुझे पता चलेगा कि कंचा उगता है, या नहीं.”



फिर बेनी को एक चमकीली गोल चीज़ दिखी.

“यह तो बीज है,” पिताजी ने कहा.

“क्या बीज उग सकता है?” बेनी ने पूछा.



बेनी ने एक और गमला लिया.
उसमें उसने बीज बोया.
उसने बीज को पानी से सींचा.

अब बेनी के पास चार
गमले थे.



एक में कंकड़ था,



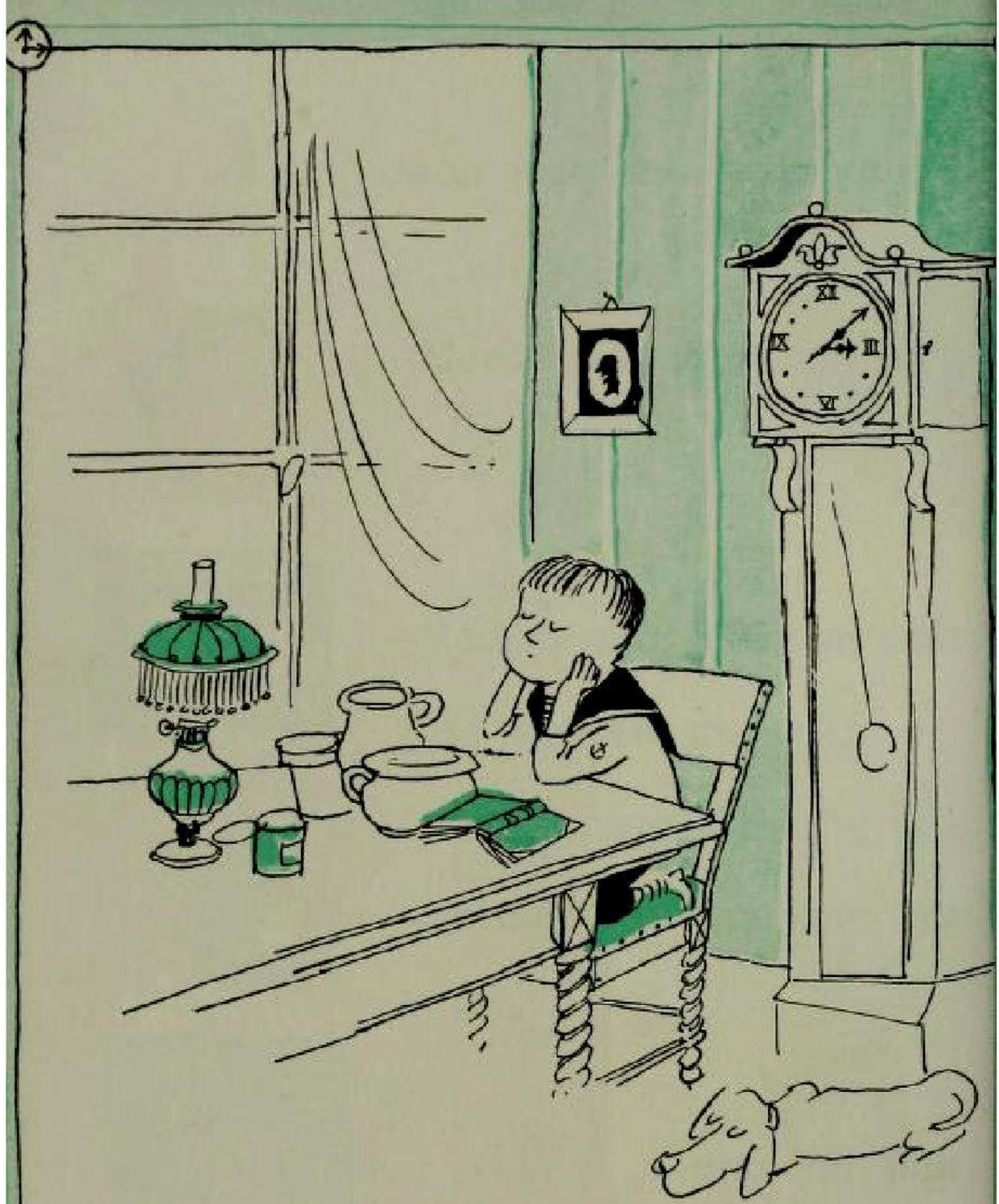
दूसरे में पत्थर था,



तीसरे में कंचा था,



और चौथे में गोल,
चमकीला बीज था.



फिर बेनी ने इंतज़ार किया.

फिर एक दिन
एक गमले में से
हरा तना बाहर निकला.



वो कंकड़ में से नहीं निकला.
वो पत्थर में से नहीं निकला.
वो कंचे में से नहीं निकला.
वो हरा तना बाहर निकला, उस गोल,
चमकीले बीज से.



तब बेनी को पता चला
कि बीज उग सकता है.



दो

बीज क्यों उगता है?

एक बड़े बीज के अन्दर देखो और खोजो.

एक छोटा अंकुर लो जिसमें दो छोटी
पत्तियों के साथ वो छोटा हिस्सा हो जो
तना और जड़ बने.

ऐसा छोटा पौधा, बड़ा होकर एक बड़ा पौधा
बन सकता है.



बेनी यह जानना चाहता था कि
बीज क्यों उगता है?

उसने पूछा, “क्या बात है कि
कंकड़, पत्थर और कंचे नहीं उगते,
पर बीज उगते हैं?

बीज में ऐसी क्या खास बात है?

उसमें ऐसा क्या है जिससे वो उगता है?”

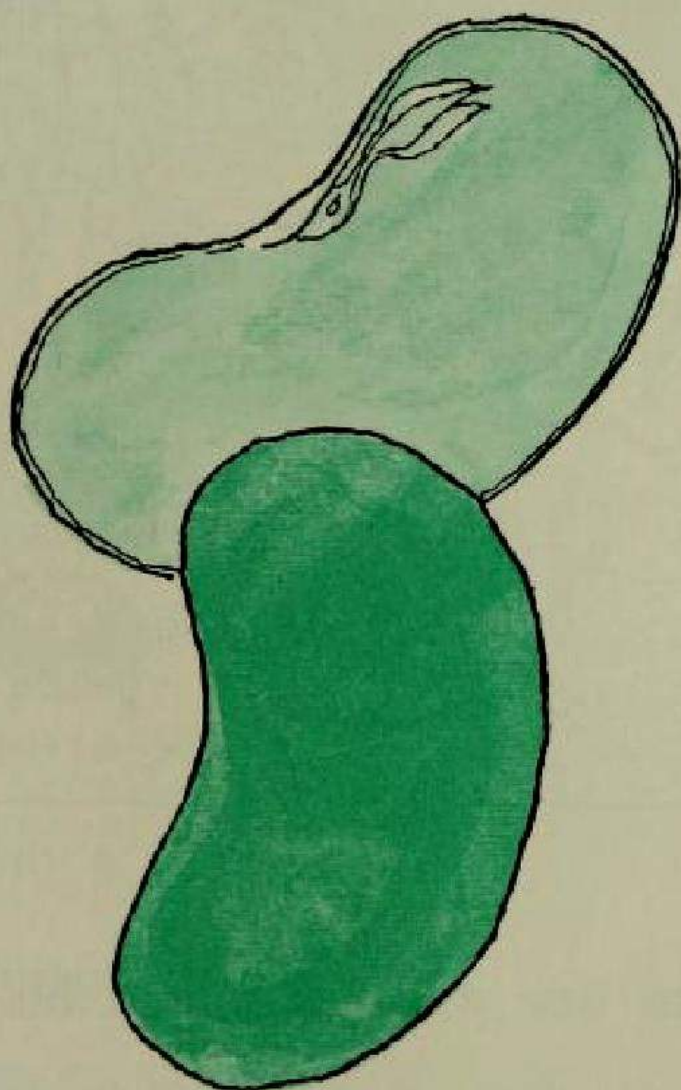


“इसमें से एक बीज को खोलकर देखो,” पिताजी ने कहा.

उन्होंने बेनी को लोबिए की एक थैली दी.

“लोबिया भी एक बीज है,” उन्होंने कहा.

“एक बीज को खोलो और उसके अन्दर देखो.”



बेनी ने लोबिए को खोला.
अन्दर उसे एक बच्चा पौधा दिखा.



“मैं अब एक लोबिया बोऊँगा,” बेनी ने कहा.

“मैं उसमें पानी डालूँगा.

फिर बीज के अन्दर का बच्चा पौधा बड़ेगा
और उगेगा.”



फिर बेनी ने एक लोबिया बोया.
वो उसे रोज़ पानी देता.
उससे लोबिया उगा.
वो बड़ा, और बड़ा हुआ.
फिर वो लोबिए का बड़ा पौधा बना.



“मुझे और बीज चाहिए,” बेनी ने कहा.

“मैं उन्हें अलग-अलग गमलों में बोऊंगा.

मैं उन्हें रोज़ पानी दूंगा जिससे वे उगें.”

लोबिया



पिताजी ने उसे कुछ अन्य लोबिए दिए.

बेनी ने लाल लोबिया बोया.

उसने सफ़ेद लोबिया बोया.

उसने काला लोबिया बोया.

उसने भूरा लोबिया बोया.

उसने चकत्तों वाला लोबिया भी बोया.





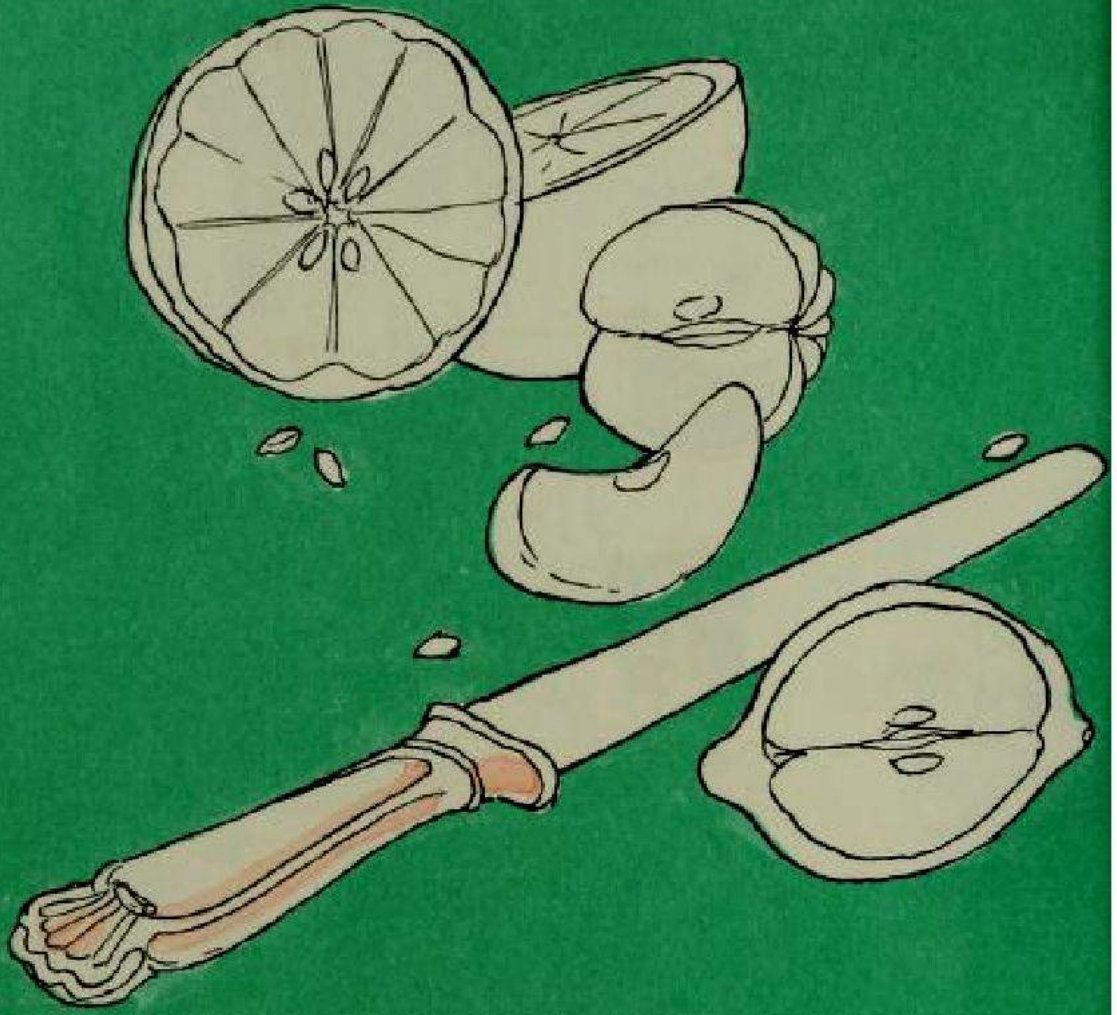


लाल लोबिया उगा.
 सफ़ेद लोबिया उगा.
 काला लोबिया उगा.
 भूरा लोबिया उगा.
 चकत्तों वाला लोबिया भी उगा.
 वे उगे और खूब बड़े और
 लोबिए के बड़े पौधे बने.



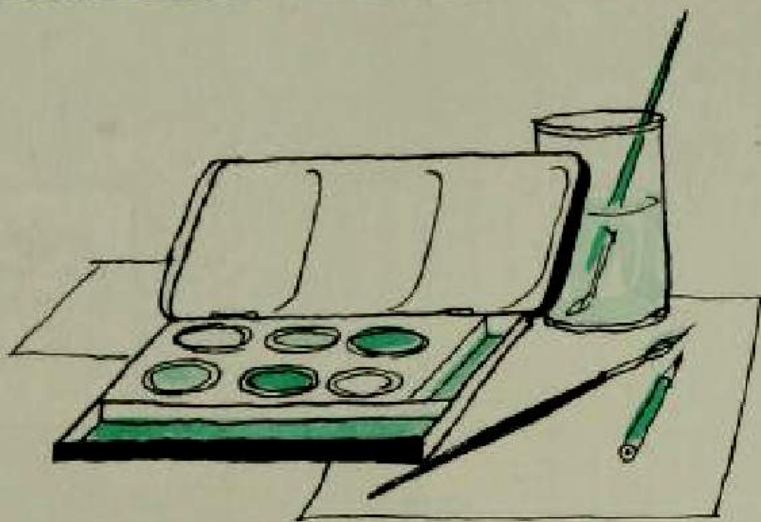


“यह तो देखने में बिल्कुल पहले वाले
लोबिए के पौधे जैसे हैं,” बेनी ने कहा.
“अब मुझे कुछ नया चाहिए!”



उस दिन बेनी के पिता ने उसे
एक ग्रेपफ्रूट का बीज दिया
एक संतरे का बीज दिया
और एक नींबू का बीज दिया.





बेनी ने उन सभी बीजों को बोया.

उसने ग्रेपफ्रूट के बीज को एक गमले में बोया.

उसने संतरे के बीज को दूसरे गमले में बोया.

उसने नींबू के बीज को तीसरे गमले में बोया.

उसने ग्रेपफ्रूट का एक चित्र बनाया.

उसने संतरे का एक चित्र बनाया.

उसने नींबू का भी एक चित्र बनाया.

उन चित्रों को उसने सही गमलों में लगाया.

“अब जब वो बीज उगेंगे तो मुझे पता चलेगा,”

बेनी ने कहा, “कि किस बीज में से क्या निकला.”



संतरे का बीज उगा.

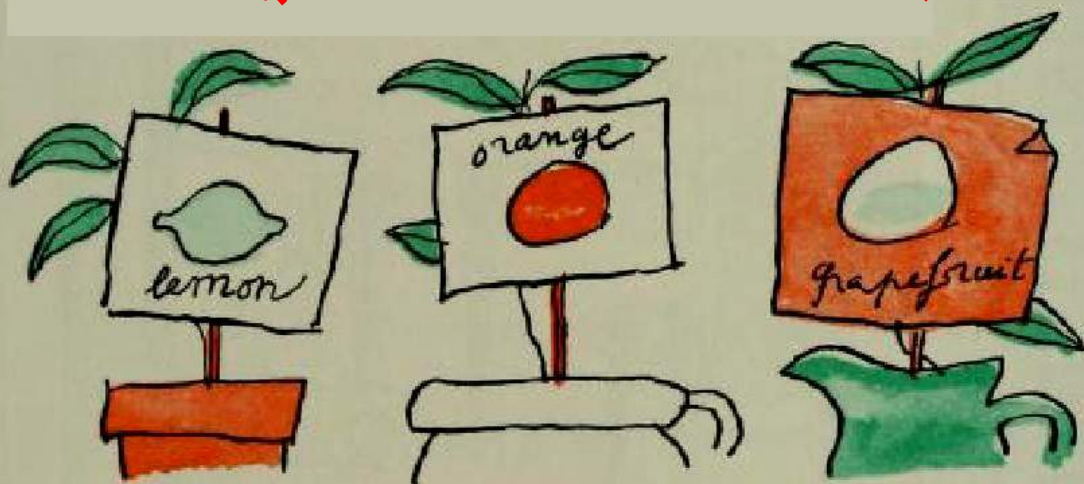
सभी बीज उगे.

सभी पौधों की गहरे रंग की चमकीली पत्तियां थीं.

नींबू

संतरा

ग्रेपफ्रूट



“अगर गमलों पर उनके चित्र नहीं होते,”
बेनी ने कहा, “तो मुझे उनमें अंतर पता ही
नहीं चलता!”

दाल

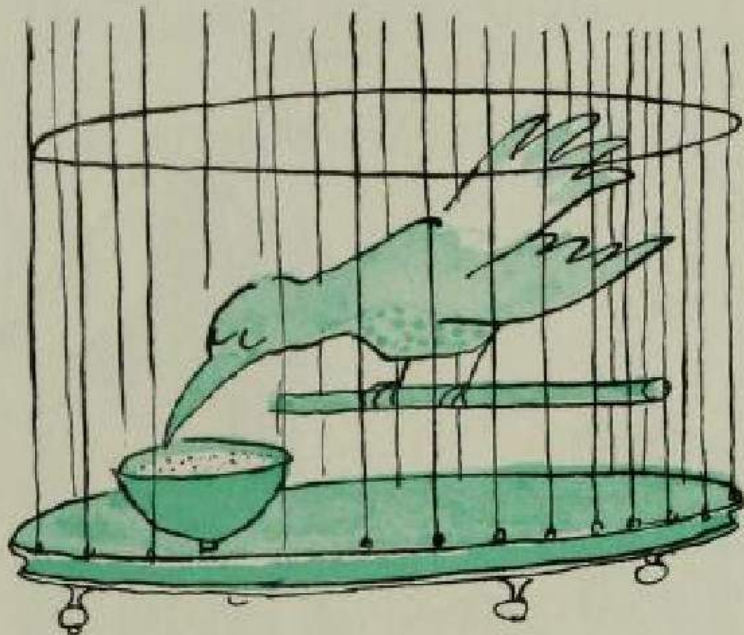


“मुझे उगाने के लिए अब और बीज चाहिए,”
बेनी ने कहा.

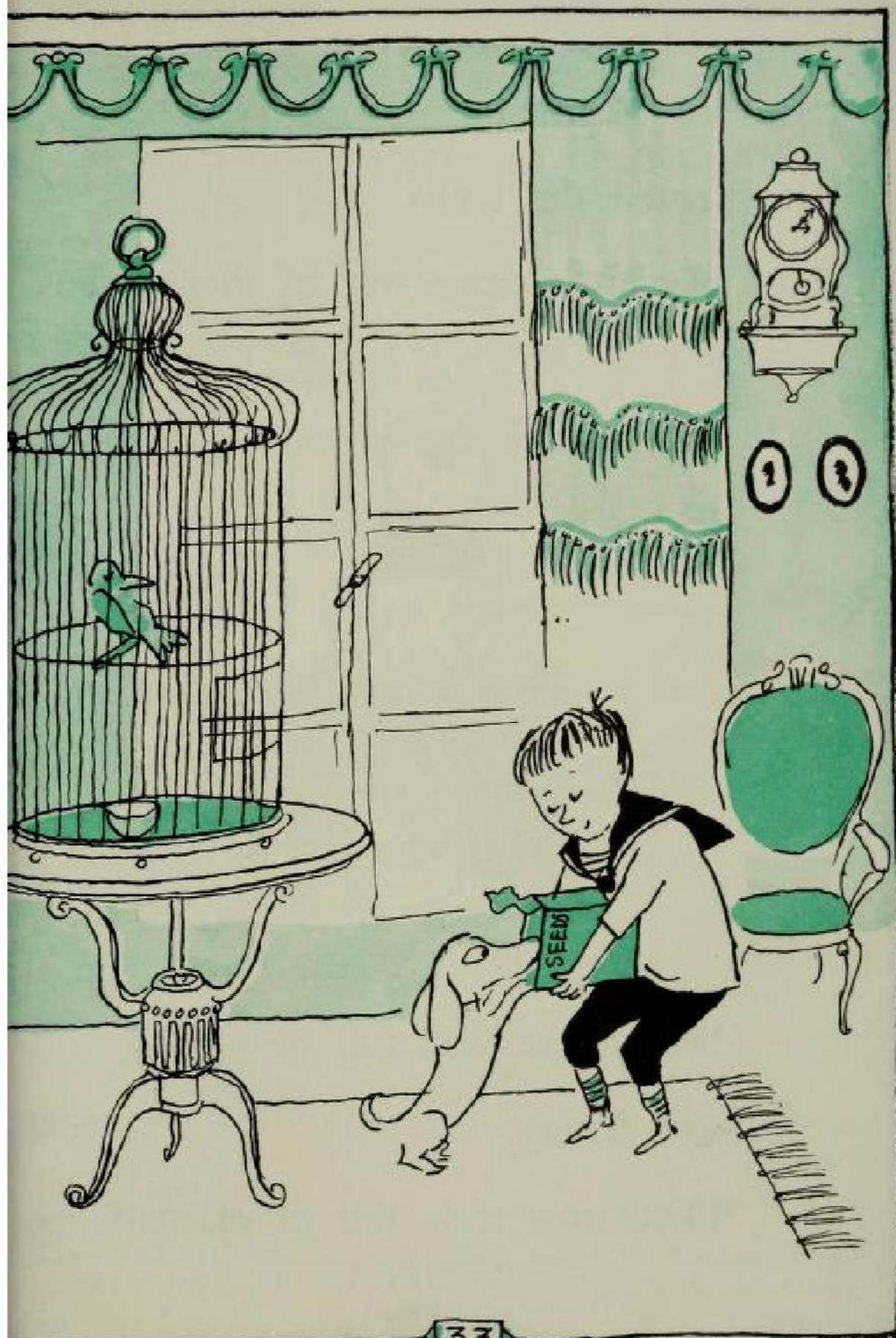
तब पिताजी ने किचन में से बेनी को कुछ
दाल के दाने दिए.

उन्होंने मटर के डिब्बे में से उसे कुछ मटर
के दाने भी दिए.

फिर बेनी ने दाल और मटर के पौधे उगाए.



फिर एक दिन बेनी ने खुद कुछ बीज खोजे.
वो अपनी चिड़िया के लिए “दाना” लाने गया.
उसने वहां एक डिब्बा देखा.
उस पर लिखा था “बीज”.
उसने उसमें से कुछ बीज लिए.
“यह भी बीज हैं!” बेनी चिल्लाया.
“इन बीजों में से क्या उगेगा?”



उसने वो बीज एक गमले में बोए.

उन बीजों में से बहुत से पौधे बाहर निकले!



“घर में ही इतने सारे बीज थे!” बेनी ने
आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा.

“और अब मेरा घर पौधों से भरा है!”

तीन

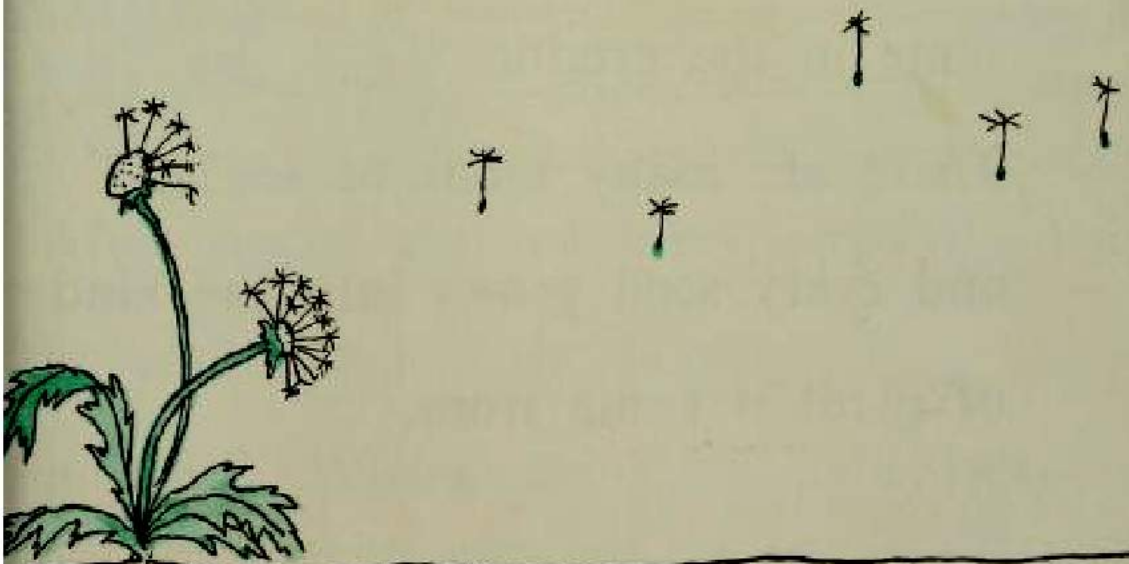
तुम्हें बाहर भी बीज मिलेंगे.

तुम उन्हें जाकर ढूँढो.

हवा बीजों को बहाती है.

पानी, बीजों को इधर-से-उधर ले जाता है.

कुछ बीज, कपड़ों से चिपक जाते हैं.





गिलहरियाँ कुछ बीज खाती हैं और कुछ को ज़मीन में दफना देती हैं.

बीज अलग-अलग किस्म के होते हैं. हरेक बीज से एक अलग किस्म का पौधा उगता है, बिल्कुल वैसा ही - जिससे वो बीज पैदा हुआ था.



घर में उपलब्ध सभी बीज बोने के बाद बेनी ने कहा,

“मुझे और बीज कहाँ मिलेंगे?

मुझे बोने के लिए अन्य किस्म के बीज चाहिए.”



“तुम बाहर जाकर देखो,” बेनी के पिता ने उसे सलाह दी.

“तुम बाहर बाग़ में जाकर देखो.

पार्क में जाकर देखो.

सड़क पर देखो.

तुम्हें हर जगह बीज मिलेंगे.”





उसके बाद बेनी बीज खोजने निकला.



बेनी ने बाग़ का एक चक्कर लगाया.

फिर दूसरा चक्कर लगाया.

उसे बीज नहीं मिले. बीज कहाँ थे?

फिर वो रुका.

उसे मिट्टी का एक ढेर दिखा.

बेनी को उसमें तीन बीज दिखे.

एक उनमें से गोल और भूरे रंग का था.

दूसरा गोल और सफ़ेद था.

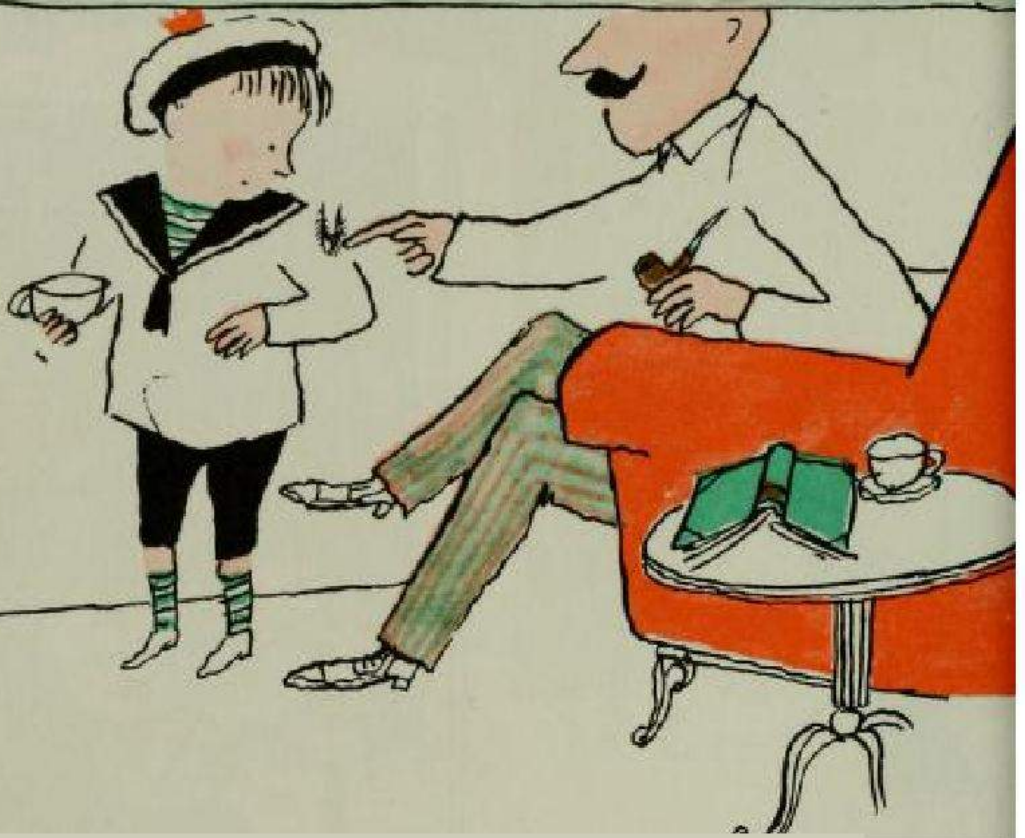


बेनी उन बीजों को घर लाया.

उसने उन्हें एक कप में रखा.

“मुझे कुछ बीज मिले,” उसने पिताजी से कहा.

पिताजी, बेनी के बीज देखने आए.



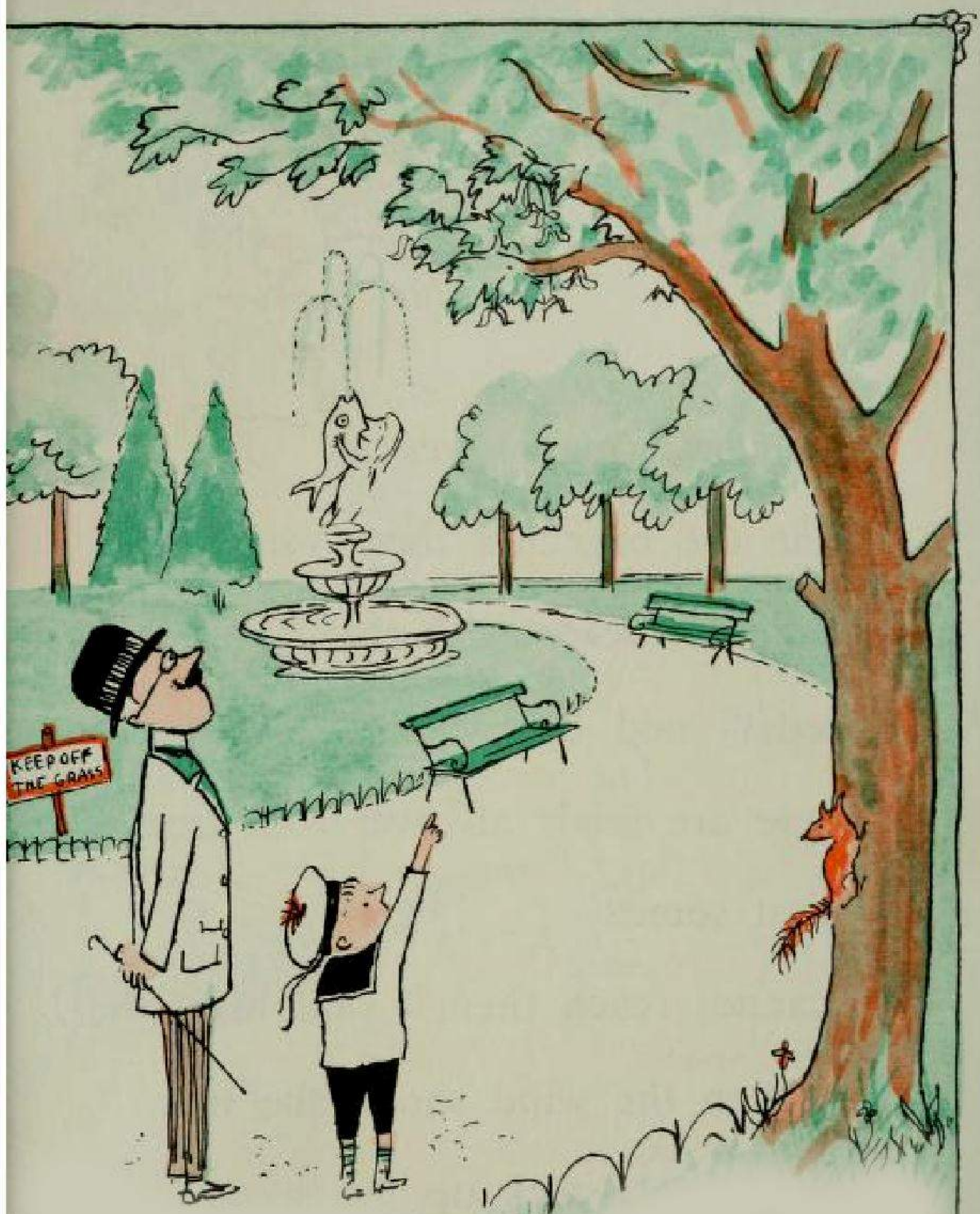
“तुम्हें तीन बीज मिले!

पर देखो इस बीज ने तुम्हें ढूँढ निकाला, बेनी!”

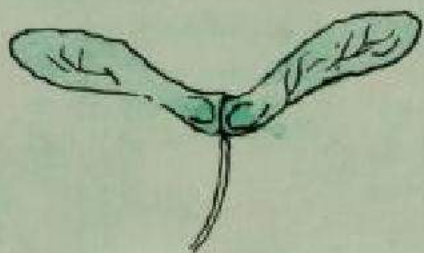
फिर पिताजी ने बेनी के कोट से चिपके एक बीज को हटाया और उसे बेनी को दिया.

“चलो, अब कुल मिलकर चार बीज हुए,” बेनी ने कहा.





एक दिन बेनी और उसके
पिताजी पार्क में घूमने गए.



वहां पर उन्हें मेपिल का पेड़ दिखा.

पेड़ की ऊपरी टहनियों पर हरे-पंखों वाले बीजों के गुच्छे लटके थे.

“बीज!” बेनी ने कहा.

“यह पेड़ तो बीजों से लदा पड़ा है!

मुझे भी इसके कुछ बीज चाहिए.”

“बीज बहुत ऊंचाई पर लगे हैं. मैं वहां तक पहुँच नहीं सकता हूँ,” पिताजी ने कहा.

तभी एक हवा का तेज़ झोंका आया.

बेनी ने दौड़कर ऊपर से गिरे बीजों को उठाया.

बीज ज़मीन पर गिरते समय हवा में लहरा रहे थे.



बेनी और उसके पिताजी एक बेन्च पर बैठे.
वहां एक गिलहरी ज़मीन में एक छेद बना रही
थी.

उसने छेद में एक बड़ा, भूरे रंग का बीज डाला
और उसके बाद छेद को ढ़क दिया.

“वो उस बीज को छिपाकर रख रही है,” बेनी के
पिताजी ने कहा.

“अगर गिलहरी उस बीज को बाद में नहीं ढूँढ
पाई तो शायद वो एक बाँझ का बड़ा पेड़ बन
जाए.”





“मैं कोशिश करूंगा की वो एक बड़ा बाँझ का पेड़ बने,” बेनी ने कहा.

फिर बेनी ने उस बीज को खोदकर निकला और उसे अपनी जेब में रखा.

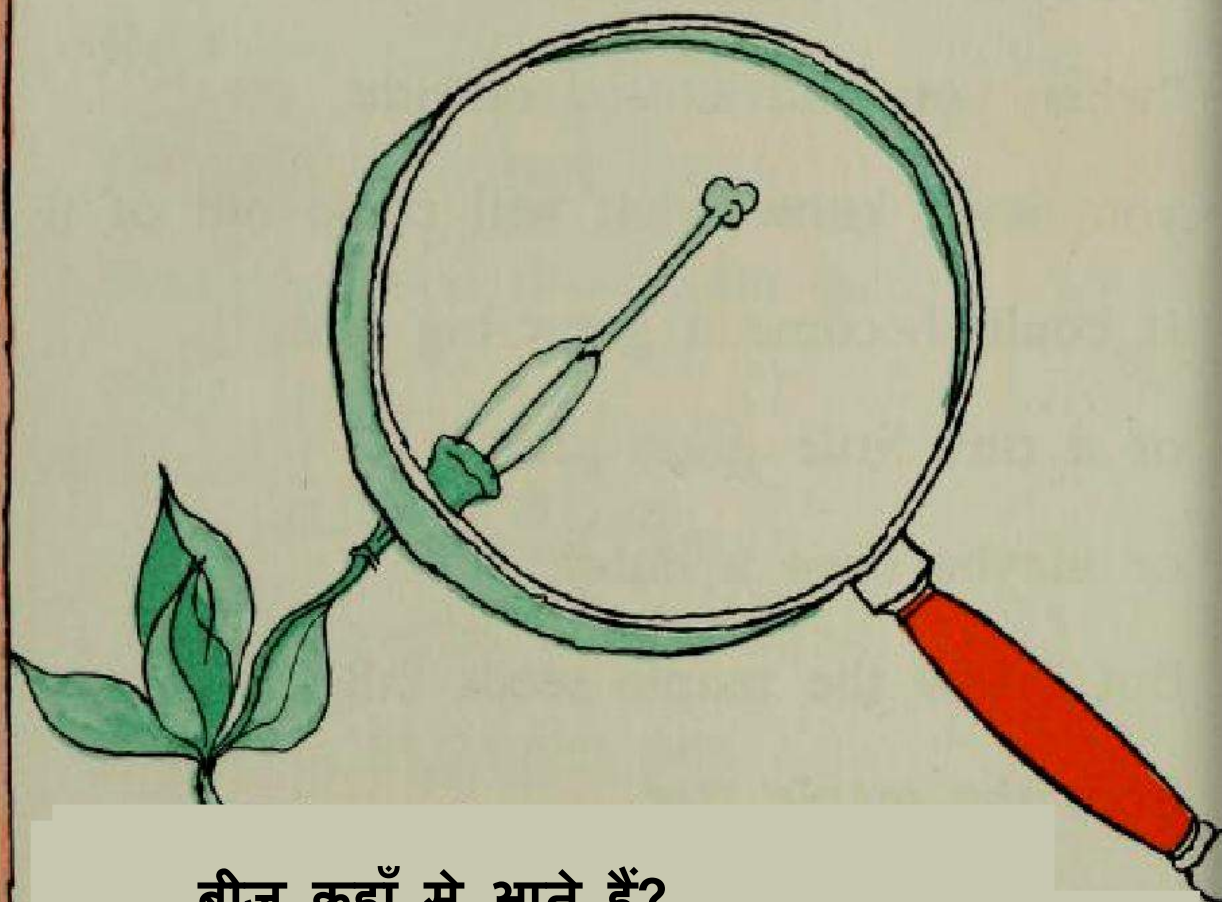
घर वापिस जाते वक्त बेनी ने और बीजों
को ढूँढा.

कुछ बीज पानी के गड्ढों में तैर रहे थे.
वो उन्हें भी अपने साथ घर वापिस लाया.
बेनी ने मेपिल और बाँझ के बीज बोए.

उसने बाग़ में मिले
गोल भूरे बीज,
लाल बीज
और सफ़ेद गोल बीज
और उसके कोट से चिपका बीज
और गड्ढों में तैरते बीज,
सभी बीज बोए.

“पिताजी,” बेनी ने कहा,
“जब कोई बीज बाहर पड़ा मिलता है तो
यह पता ही नहीं चलता है कि उसमें से
क्या निकलेगा. क्या वो एक बड़ा पेड़,
छोटी घास, या फूल का पौधा बनेगा?
पर क्योंकि मैंने मेपिल के बीजों को उसके
पेड़ से गिरते हुए देखा, इसलिए मुझे पता
है की उन बीजों में से क्या निकलेगा.
बाँझ के बीज से बाँझ का पेड़ ही बनेगा.
अगर मुझे बीज का पेड़ पता हो तो बीज
से क्या निकलेगा, यह भी मुझे मालूम
होगा.”

IV



बीज कहाँ से आते हैं?

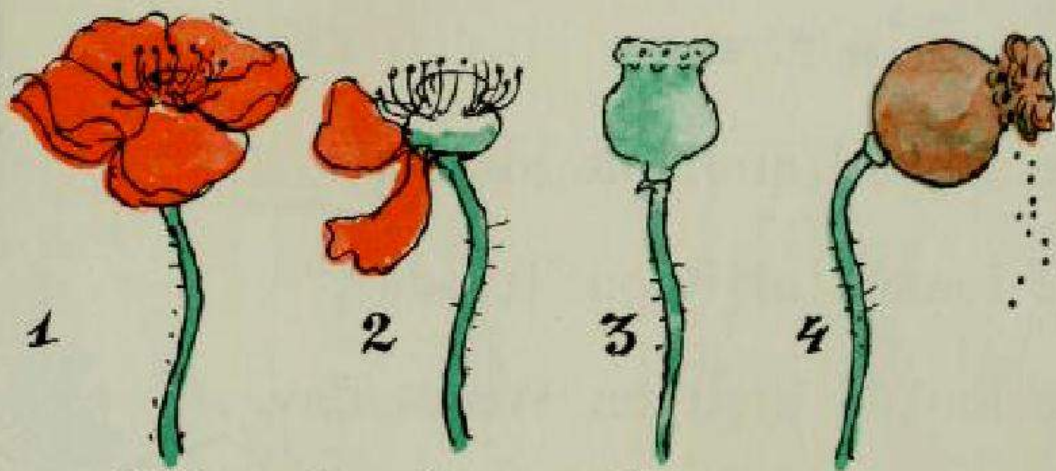
ज़रा फूलों को देखो.

उनकी सभी पंखुड़ियाँ हटाओ.

तब तुम्हें बीच में कुछ हरा दिखाई देगा.

उसे पिस्टिल (पुष्प-योनी) कहते हैं.

उसके अन्दर बीज बढ़ते हैं.



फूल के मुरझाने के बाद उसकी पंखुड़ियाँ गिर जाती हैं.

फिर पिस्टिल (पुष्प-योनी) बड़ी और मोटी होती जाती है.

उसके अन्दर छोटे बीज, लगातार बड़े, और बड़े होते हैं.

अंत में वो बीज पक जाते हैं.

फिर वो बीज ज़मीन पर गिरते हैं और उनमें से नए पौधे पैदा होते हैं.

बीज कहाँ से आते हैं?

इस पहेली को अब बेनी ने

सुलझा लिया था.

एक दिन उसने अपने लोबिए

के पौधे को देखा.

उसमें उसे एक फूल नज़र

आया.

उसने उसे सोमवार को देखा.

उसने उसे मंगलवार को देखा.

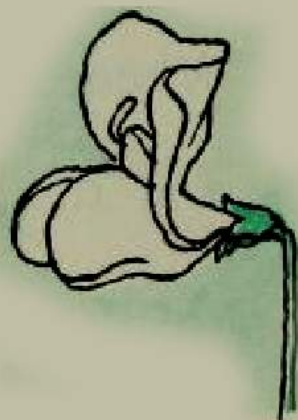
उसने उसे बुधवार को देखा.

गुरुवार को उसकी पंखुड़ियाँ

सूखने लगीं.

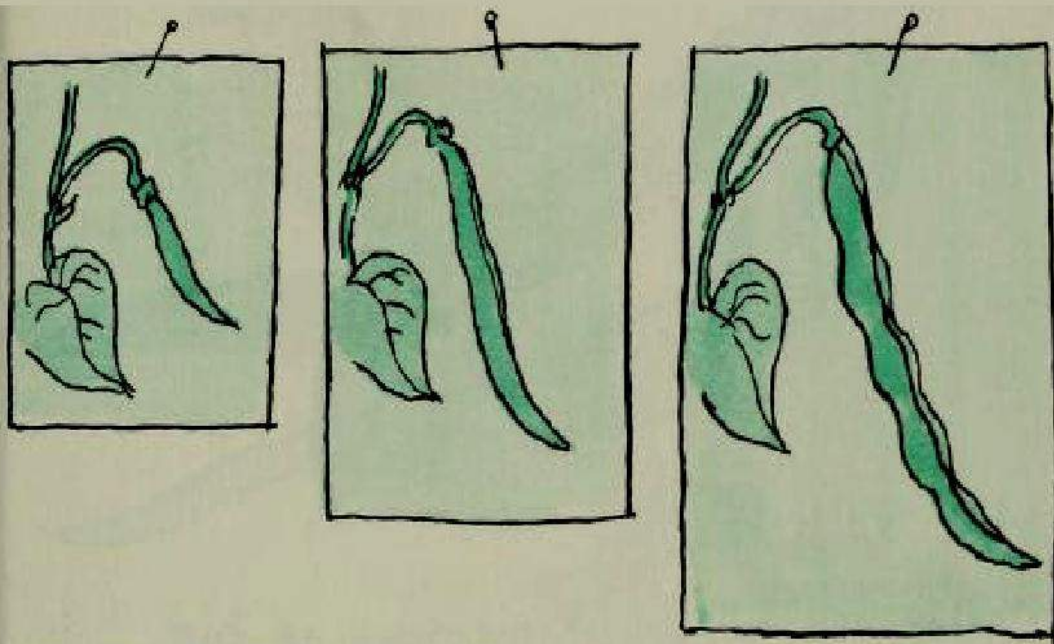
शुक्रवार को पंखुड़ियाँ झड़कर

गिर गईं.



तब बेनी को फूल के बीच में एक हरा
केंद्र दिखाई दिया.

वो देखने में हरी नाव जैसा था.



बेनी रोजाना उसे देखता.

धीरे-धीरे वो बड़ा, और बड़ा होता गया.

उसके अन्दर बेनी को कुछ फूली हुई चीज़ें
दिखाई दीं.

धीरे-धीरे वो चीज़ें मोटी और बड़ी होती गयीं.

बेनी ने इंतज़ार किया.



बेनी ने कुछ और इंतज़ार किया.

अंत में वो चीज़ें बहुत मोटी हुईं.

उससे ज्यादा मोटी वो हो ही नहीं सकती थीं.

तब बेनी ने उस फली को पौधे से तोड़ा.

उसने उस फली को खोलकर देखा.

फली के अन्दर फूली हुए चीज़ें असल में लोबिए के दाने थे!

“अरे! यह तो लोबिए के बीज हैं,” बेनी ने कहा.



“मैंने खुद अपने आप बीज बनाए!
मैंने खुद अपने आप बीज बनाए!
अब मेरे पास बोन को बहुत से बीज होंगे!”



